श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्रीनन्दनन्दन स्तोत्र

श्री मुनिरुवाच

बालं(न्) नवीनशतपत्रविशालनेत्रं,

बिम्बाधरं सजलमेघरुचिं मनोज्ञम् ।

मन्दस्मितं मधुरसुन्दरमन्दयानं,

श्रीनन्दनन्दनमहं मनसा नमामि ॥1॥

श्रीमुनि बोले –जिनके नेत्र नूतन विकसित शतदल कमल के समान विशाल है,अधर बिम्बाफल की अरुणिमा को तिरस्कृत करनेवाले हैं तथा श्री अङ्ग सजल जलधर की श्याम-मनोहर कांति को छीने लेते हैं,जिनके मुख पर मन्द मुसकान को दिव्य छटा छा रही है तथा जो सुन्दर मधुर मन्दगति से चल रहे हैं, उन बाल्यावस्था से विलसित मनोज्ञ श्रीनन्दनन्दन को मैं मन से प्रणाम करता हूँ ।

मञ्जीरनूपुररणन्नवरत्नकाञ्ची-

श्रीहारकेसरिनखप्रतियन्त्रसंघम् ।

दृष्ट्यार्तिहारिमषिबिन्दुविराजमानं(वँ),

वन्दे कलिन्दतनुजातटबालकेलिम् ॥२॥

जिनके चरणों में मञ्जीर और नूपुर झंकृत हो रहे हैं और कटि में खनखनाती हुई नूतन रत्ननिर्मित काञ्चीशोभा दे रही है, जो बघनखा से युक्त यन्त्र समुदाय तथा सुन्दर कण्ठहार से सुशोभित हैं,जिनके भालदेश में दृष्टिजनित पीड़ा हर लेनेवाली कज्जल की बिंदी शोभा दे रही है तथा जो कलिन्दनन्दिनी के तट पर बालोचित क्रीड़ा में संलग्न हैं, उन श्रीहरि की मैं वन्दना करता हूँ ।

पूर्णेन्दुसुन्दरमुखोपरि कुञ्चिताग्राः(ख्),

केशा नवीनघननीलनिभाः(स्) स्फरन्तः ।

राजन्त आनतशिरःकुमुदस्य यस्य,

नन्दात्मजाय सबलाय नमो नमस्ते ॥३॥

जिनके पूर्णचन्द्रोपम सुन्दर मुख पर नूतन नीलघन की श्याम विभा को तिरस्कृत करने वाले घुंघराले काले केश चमक रहे हैं तथा जिनका मस्तकरूपी कुमुद कुछ झुका हुआ है,उन आप नन्दनन्दन श्रीकृष्ण तथा आपके अग्रज श्रीबलराम को मेरा बारंबार नमस्कार है ।

श्रीनन्दनन्दनस्तोत्रं, प्रातरुत्थाय यः(फ्) पठेत् ।

तन्नेत्रगोचरो याति, सानन्दं(न्) नन्दनन्दनः ॥४॥

जो प्रातःकाल उठकर इस'श्रीनन्दनन्दनस्तोत्र'का पाठ करता है,उसके नेत्रों के समक्ष श्रीनन्दनन्दन सानन्द प्रकट होते हैं ।

श्रीनंदनंदनाष्टकम्

सुचारुवक्त्रमण्डलं(म्), सुकर्णरत्नकुण्डलम् ।

सुचर्चिताङ्गचन्दनं(न्), नमामि नन्दनन्दनम् ॥ 1॥

मैं उस नन्दनन्दन को प्रणाम करता हूँ,जिसका चेहरा(मुख)अत्यन्त प्रफुल्लित है,जिनकें सुन्दर कानों में रत्नजड़ित कुंडल लटकते हैं,और जिनका पूरा शरीर सुगन्धित चंदन द्वारा मण्डित है ।

सुदीर्घनेत्रपङ्कजं(म्), शिखीशिखण्डमूर्धजम् ।

अनन्तकोटिमोहनं(न्), नमामि नन्दनन्दनम् ॥ 2॥

मैं उन नन्दनन्दन को प्रणाम करता हूँ,जिनके नेत्र,पूर्ण रूप से खिले हुए कमल पुष्प से भी अधिक सुन्दर हैं,जिनका शीश,मोर पंखो से सुवयवस्थित रूप में अलंकृत है,और जो लाखो-करोड़ों कामदेवों को भी मंत्रमुग्ध कर लेते हैं ।

सुनासिकाग्रमौक्तिकं(म्), स्वच्छदन्तपङ्क्तिकम् ।

नवाम्बुदाङ्गचिक्कणं(न्), नमामि नन्दनन्दनम् ॥ 3॥

मैं उस नन्दनन्दन को प्रणाम करता हूँ,जिनकी सुन्दर नाक में एक गज-मोती लटक रहा है,जिनके दाँत बहुत अधिक चमकीले हैं,जिनका शारीरिक वर्ण एक नव वर्षा के मेघ से भी अधिक सुन्दर व

चमकीला कान्तिमय है ।

करेणवेणुरञ्जितं(ङ्), गतिः(ख्) करीन्द्रगञ्जितम् ।

दुकूलपीतशोभनं(न्), नमामि नन्दनन्दनम् ॥ 4॥

मैं उस नन्दनन्दन को प्रणाम करता हूँ,जिनके हस्त कमल बाँसुरी या मुरली धारण किए हुए हैं,जिनकी धीमी चाल,एक निरुत्साहित हाथी की चाल को भी परास्त कर देती हैं,और जिनके साँवले अंग,एक पीली ओढ़नी द्वारा सौदंर्य से पूर्ण हैं ।

त्रिभङ्गदेहसुन्दरं(न्), नखद्युतिः(स्) सुधाकरम् ।

अमूल्यरत्नभूषणं(न्), नमामि नन्दनन्दनम् ॥ 5॥

मैं उस नन्दनन्दन को प्रणाम करता हूँ,जिनकी त्रिभंग मुद्रा उत्कृष्ट रूप से सुरुचिपूर्ण व ललितमय है,जिनके पैरों के नाखूनों की कान्ति,चन्द्रमा को भी लज्जित कर देती है,और जो बहूमूल्य रत्न एवं आभूषण पहनते हैं ।

सुगन्ध अङ्गसौरभं(म्), उरो विराजि कौस्तुभम् ।

स्फुरत् श्रीवत्सलाञ्छनं(न्), नमामि नन्दनन्दनम् ॥ 6॥

मैं उस नन्दनन्दन को प्रणाम करता हूँ,जिनके शरीर से एक विशेष सुंदर सुगन्ध निःस्रवित होती है और जिनका विशाल वक्षस्थल,कौस्तुभ मणि एवं श्रीवत्स के चिह्न से अलंकृत है ।

वृन्दावनसुनागरं(वँ), विलासानुगवाससम् ।

सुरेन्द्रगर्वमोचनं(न्), नमामि नन्दनन्दनम् ॥ 7॥

मैं उस नन्दनन्दन को प्रणाम करता हूँ,वृन्दावन के कुशल प्रेमी जो त्रुटिहीन लीलाएँ करते हैं और जो ऐसे वस्त्रों में हैं जो उन लीलाओं के लिए एकदम अनुकूल हैं,और जिन्होंने इन्द्र के अभिमान को चूर-चूर करके नष्ट कर दिया था ।

व्रजाङ्गनासुनायकं(म्), सदा सुखप्रदायकम् ।

जगन्मनः(फ्)प्रलोभनं(न्), नमामि नन्दनन्दनम् ॥ 8॥

मैं उस नन्दनन्दन को प्रणाम करता हूँ,व्रज की गोपियों के प्रेमी के रूप में उन्हें जीवन भर स्थायी रूप से प्रसन्न करते हैं और जो समस्त जीवों के मन को मंत्रमुग्ध कर देते हैं ।

श्रीनन्दनन्दनाष्टकं(म्), पठेद्यः(श्) श्रद्धयान्वितः ।

तरेद्भवाब्धिदुस्तरं(लँ), लभेत्तदङ्घ्रियुक्तकम् ॥ 9 ॥

जो भी इस श्रीनन्दनन्दनाष्टकम् का नियमित रूप से पाठ करता है वह भौतिक अस्तित्व के कठिनाइयों एवं बाधाओं से पूर्ण,जीता न जा सकने वाला,प्रतीत होते सागर को भी सरलता से पार कर लेता है और श्रीकृष्ण के चरण कमलों में नित्यवास प्राप्त करता है ।

इति श्रीनन्दनन्दनाष्टकं(म्) सम्पूर्णम् ।

श्रीकृष्णचंद्राष्टकम्

महानीलमेघातिभव्यं सुहासं,

शिवब्रह्मदेवादिभिः(स्) संस्तुतश्च ।

रमामन्दिरं(न्) देवनन्दापदाहं,

भजे राधिकावल्लभं(ङ्) कृष्णचन्द्रम् ॥ 1॥

रसं(वँ) वेदवेदान्तवेद्यं(न्) दुरापं,

सुगम्यं(न्) तदीयादिभिर्दानवघ्नम् ।

लसत्कुण्डलं सोमवंशप्रदीपं,

भजे राधिकावल्लभं(ङ्) कृष्णचन्द्रम् ॥ 2॥

यशोदादिसंलालितं पूर्णकामं(न्),

दृशोरञ्जनं प्राकृतस्थस्वरूपम् ।

दिनान्ते समायान्तमेकान्तभक्तैर्-

भजे राधिकावल्लभं(ङ्) कृष्णचन्द्रम् ॥ 3॥

कृपादृष्टिसम्पातसिक्तस्वकुञ्जं(न्),

तदन्तःस्थितस्वीयसम्यग्दशादम् ।
पुनस्तत्र तैः(स्) सत्कृतैकान्तलीलं,
भजे राधिकावल्लभं(ङ्) कृष्णचंद्रम्॥ 4॥

गृहे गोपिकाभिर्धृते चौर्यकाले,
तदक्ष्णोश्च निक्षिप्य दुग्धं(ञ्) चलन्तम् ।
तदा तद्वियोगादिसम्पत्तिकारं,
भजे राधिकावल्लभं(ङ्) कृष्णचन्द्रम् ॥ 5॥

चलत्कौस्तुभव्याप्तवक्षःप्रदेशं,
महावैजयन्तीलसत्पादयुग्मम् ।
सुकस्तूरिकादीप्तभालप्रदेशं,
भजे राधिकावल्लभं(ङ्) कृष्णचन्द्रम् ॥ 6॥

गवा दोहने दृष्टराधामुखाब्जं(न्),
तदानीं(ञ्) च तन्मेलनव्यग्रचित्तम् ।
समुत्पन्नतन्मानसैकान्तभावं,
भजे राधिकावल्लभं(ङ्) कृष्णचन्द्रम् ॥ 7॥

अदः(ख्) कृष्णचन्द्राष्टकं प्रेमयुक्तः(फ्),
पठेत्कृष्णसान्निध्यमाप्नोति नित्यम् ।
कलौ यः(स्) स संसारदुःखातिरिक्तं,

प्रयात्येव विष्णोः(फ्) पदं(न्) निर्भयं(न्) तत् ॥ ४॥

॥ इति श्रीरघुनाथप्रभुविरचितं श्रीकृष्णचंद्राष्टकम् सम्पूर्णम् ॥